तो कोई सोचने वाली बात नहीं है। इस टोली में कितनों के घर में चूल्हा दो बार जलता है? हाँ ! दो दिन पहले साहूकार के दुकान से दो किलो चावल उधारी से लाया था तब आज दिन में भात पका था। खाने के बाद चईना को नशे जैसे लगा होगा और अभी काम भी तो कुछ करने को नहीं है।

'तू सो गया ?'

'कहीं जाने का नहीं है क्या?'

तबीयत ठीक नहीं लग रहा है। बुखार जैसे लग रहा है। सूखी उसके सिर पर हाथ रखी तो उसे पता चला कि चईना को तेज बुखार है। तू बाहर क्यों सोया है? मैं घर के अंदर बिस्तर लगा देती हूँ। वहाँ जाकर सो जा। बारिश भी होने वाली है। सूखी परेशानी में पड़ गयी। घर का मर्द अगर बिस्तर पर आ जाए तब चारों ओर अंधकार दिखाई पड़ता है। वही साहूकार बुखार की दवाई भी देता है और तंत्र-मंत्र के पानी भी। सभी का वह पहला डाक्टर होता है।

कहता है कि ईश्वर के नाम पर एक रूपये रखकर प्रणाम करो। सूखी सोची कि संध्या समय उसके पास जायेगी। पर यह नहीं हो पाया। संध्या से पहले तूफान आने लगा, बिजली कड़कने लगी। सूखी देवी माँ के पास दीया जलायी और प्रार्थना की। अब वह क्या करेगी, कहाँ जायेगी? कौन उसकी मदद करेगा। उसके आँखों से आँसू बहने लगी। सूखी को इस विपत्ति से बचाने के लिए कोई नहीं है। मनुष्य के पास इसी तरह के विपदा कभी-कभार आती है जहाँ सब होते हुए भी कोई नहीं होता है। मनुष्य का भरोसा केवल ईश्वर पर और किसी के ऊपर नहीं। सूखी के जीवन जंजाल में ईश्वर ने कभी कोई सुख नहीं दिया है। इस बात को सूखी ने कई बार परखा है। फिर भी वह ईश्वर से गुहार लगाती रहती है। इस जीवन रूपी समुद्र में कहीं कोई सहारा न होने पर अगर वह सहायता कर दें तो उसका घर बच सकता था।

चईना को सात दिन से बुखार हुआ है, छूटता ही नहीं। सभी प्रकार के इलाज करा चुकी है। साहूकार बैदराज से लेकर चमनपुर के तंत्र-मंत्र के साधक भी दो बार झाड़-फूँक किया है पर नतीजा कुछ नहीं। उस दिन सरपंच आया था, कहा कि इन सब देहाती ईलाज को छोड़कर सरकारी अस्पताल जाओ। उसने अपने ओर से कहा मैं आदमी भेज दूंगा, वह दवाई लेकर आ जाएगा।

जब सूखी ने उधारी से लाये हुए दस रूपये सरपंच को दिए तब अचानक से सरपंच खड़ा हो गया और कहने लगा अरे! यह क्या बात हुई। सरकारी अस्पताल में मुफ्त की दवाइयां मिलती हैं। वहाँ पैसों की कोई जरूरत नहीं है। अरे! सुरिया तू चला जा, मेरा नाम डाक्टर बाबू को कहना और दवाई लेते आना। उसके बाद उसने घूमकर सूखी से कहा, ठीक है तू उसे दस रूपये दे दे। वापस आने में एक दिन तो चला जाएगा, रास्ते में कुछ खा-पी लेगा। बेचारा वह भी तो गरीब है। अपने से खाने के लिए कहाँ से पैसे लायेगा।

रात के करीब दो बजे तक सुरिया खाली हाथ लौट आया। कहा कि वहाँ डाक्टर या कम्पाउंडर कोई नहीं था। सात दिन से बंद है। वहाँ एक लड़का बैठा था। उसने दो दिन के बाद आने को कहा है। तभी डाक्टर से मुलाकात हो पायेगी। बुखार ही तो हुआ है, इतना परेशान होने का क्या है? सूखी की दुख पहाड़ जैसे बढ़ता जा रहा था। चईना चीत्कार करने लगा। ओह! मुझे पकड़ो, पकड़ो! सूखी दौड़ते हुए उसके पास गयी। चईना जोर-जोर से हाथ पैर पटक रहा था और सिर पकड़कर रोता जा रहा था। माँ-बेटे दोनों उसे जोर से पकड़े हुए थे पर उसे संभाल नहीं पा रहे थे।

पड़ोस में रहने वाला नरीया चईना के घर गया और कहा कि 'सूखी, अगर तू कहेगी तो मैं एक खटिया और उसे ढोने वाले आदमियों को साथ ले आऊँगा। उनके साथ मैं भी चलूँगा। वे कुछ नहीं लेगें। शहर के बड़े अस्पताल में इसे ले जायेंगे। इसके बिना ओर कोई उपाय नहीं है। पर इसके लिए भी कुछ चाहिए। मैं एक बात कहूँगा, मानोगी?'

सूखी आँसू चाहे जितना पोंछ रही थी लेकिन आँसू खत्म ही नहीं हो रहे थे। आँसू क्या कभी खत्म होते हैं? शायद भगवान इन आंखों के पीछे एक विस्तृत नदी जोड़ दिये हैं, जिससे हर बात में, काम में और हर समय औरतें आँसू से मुँह धो पायेंगी। ईश्वर द्वारा दिया गया यह एक सुंदर वरदान है। इसे कोई बदल नहीं सकता है।

नरीया ने कहा तू पैसों की इंतजाम करने चली जा, मैं यहाँ खटिया और बाकी इंतजाम करता हूँ। आज रात में ही इसे अस्पताल ले जाना होगा। रात होने से क्या है? हम चार लोग तो जा रहे हैं, डरने की कोई बात नहीं है। नरीया की बात मानकर सूखी गाँव के अंदर के तरफ भागने लगी और जाकर साहूकार की पैर पकड़ ली। 'मुझे बचाओ साईं! जो कहोगे वही करूंगी। मुझे बस अभी 500 रूपये उधारी दे दो। मैं चईना को लेकर बड़े अस्पताल को जाऊँगी। नहीं तो मैं आपके पैर नहीं छोड़ूंगी।

साहूकार खा चुके थे और खड़े होकर अपने मोटे से पेट पर हाथ फिरा रहे थे। कुछ समय तक शांत हो गये। उसके बाद कहने लगे 'अरे! तू क्यूँ रो रही है? इसमें रोने का क्या है? हाँ, तू विपत्ति के समय में मेरे पास आयी है, इन कुछ रूपये के लिए...क्या मैं नहीं दूँगा? एक ही गाँव में तो रहते हैं।'

पर मैं खाली हाथ आयी हूँ। सूखी रो-रोकर कहने लगी। तुम जो कहोगे मैं वह करने के लिए तैयार हूँ। साहूकार का गला नरम होने लगा, उसने कहा कि तू तो औरत है, मैं तुझे क्या कहूँगा? तू कर भी क्या सकती है? ठीक है, यह ले! बस यहाँ अपनी उंगली का निशान लगा दे और कुछ करने की जरूरत नहीं है। एक लंबा और मोटा सा कागज उसके सामने रख दिया। उसके बाद सूखी के उंगली में काली लगाकर कागज में निशान लगा दिया।

तब नरीया और शुक्रा भागते हुए वहाँ आ पहुँचे। वे दोनों कुछ नहीं कह पा रहे थे। उनके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकल रहा था, जैसे गूंगे हो गए हैं। एकदम चुप होकर खड़ा हुआ शुक्रा जोर से रोने लगा। उसके क्रंदन से सूखी और नरीया के अंदर अज्ञात भय की सिहरण पैदा कर रही थी। शुक्रा अपनी माँ को पकड़कर जोर-जोर से चिल्लाकर रो रहा था। बारिश की वह रात अधिक गंभीर और गहरी हो उठी थी। जंगल-पहाड़ सभी उस बारिश के साथ एकात्म हो गए थे। ■